Tiger Census and the use of innovative measures

The first phase of All India Tiger Estimation (AITE) began on 5th February 2018 in all the tiger reserves of Madhya Pradesh. Besides tigers, the population of leopards and other wild and herbivorous animals were also counted during the census held in four phases between 5th February to 26th March. The Tiger census held in 2018 includes use of some innovative measures to ensure effective implementation of the extensive exercise. The innovations include :

- **Training imparted by subordinates** : Generally whenever such training is organized, it is senior officials who impart the trainings. With a view to improve the understanding of the subordinates, this time the trainings were conducted by the subordinates which were attended by the senior officials. This new initiative drew an inspiration to the believe that knowledge sharing can be the best tool for self amelioration.

- **Use of Social Media to spread awareness:** The Wildlife wing of the Madhya Pradesh Forest Department has used social media to a great extent for spreading awareness about the All India Tiger Estimation. Social media platforms like Facebook, Whatsapp and Youtube have been extensively used for reaching out to the general public. The popularity of the facebook page which is run by the Madhya Pradesh Tiger Foundation Society is increasing day by day. On the other side the mersmerizing videos posted on their youtube channel have been playing a significant role to pervade the importance of wildlife and values of nature.

Photo Credit - Siddhant Arya

Photo Credit - Deepak Sankat

- **Participation of general public :** The All India Tiger Estimation (AITE) 2018 is one of its kind where people were invited from outside (including all age group, profession and gender) to become volunteer of the exercise. Invitation was given to the people who were interested to be a part of the programme and training. In the end, a certificate acknowledging the contribution of each individual was also given. This initiative led to people from all walks of life coming and lending their support for the cause.

विविधा

वन्यप्राणी अंगीकरण योजना, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल

आम नागरिकों में वन्यप्राणियों के प्रति स्नेह एवं भावनात्मक लगाव पैदा करने तथा वन्यप्राणी प्रबंधन में जन सामान्य की सहभागिता क्रियान्वित करने के उद्देश्य से वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में वन्यप्राणियों को गोद लेने की योजना जनवरी 2009 से प्रारंभ की गई थी। इस योजना के अंतर्गत वन विहार में दिनांक 1 जनवरी 2018 तक 69 वन्यप्राणियों को गोद लिया गया है। सुश्री राधा अहलुवालिया गुड़गाँव हरियाणा से जनवरी 2018 के अंतिम सप्ताह में भोपाल प्रवास के दौरान वन विहार भ्रमण पर आयीं थीं। वन विहार भ्रमण के दौरान वन्यप्राणियों के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई जिससे प्रभावित होकर इनके द्वारा वन्यप्राणी अंगीकरण योजना के अंतर्गत 1 लाख रु. की राशि का भुगतान कर एक मादा तेंदुआ नरसिंह बानों को दिनांक 28 जनवरी 2018 से एक वर्ष के लिये गोद लिया गया। इस मादा तेंदुआ शावक को दिनांक 31 अक्टूबर 2017 को वन परिक्षेत्र गाडरवाड़ा के अंतर्गत ग्राम बसुरिया में एक नव निर्मित से रेस्क्यू कर वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल लाया गया था।

विभागीय समाचार एवं गतिविधियां

पेंगोलिन की खाल समेत तीन गिरतार

विभाग की स्पेशल टास्क फोर्स द्वारा बालाघाट जिले में पेंगोलिन की खाल समेत तीन व्यक्तियों को गिरतार किया है।

ओड़िशा में दहाड़ेंगे मध्यप्रदेश के बाघ

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने ओड़िशा राज्य के सतकोशिया टाइगर रिजर्व को तीन जोड़ी बाघ देने की स्वीकृति प्रदान की है। सतकोशिया टाइगर रिजर्व में मात्र एक बाघ का जोड़ा बचा है जो अपनी औसत आयु पूर्ण कर चुका है। मध्यप्रदेश से तीन जोड़ी बाघ वहां पहुंचने के बाद बाघों का कुनबा वापस बढ़ सकेगा।

इंटरपोल द्वारा सराहना

इंटरपोल ने अंतर्राष्ट्रीय कछुआ तस्कर की गिरफ्तारी के लिए भारत (मध्यप्रदेश) की सराहना की है। पिछले दिनों मध्य प्रदेश के एसटीएफ दल ने अंतर्राष्ट्रीय वन्यप्राणी तस्करी के नेटवर्क को ध्वस्त करने में सफलता प्राप्त की है।

फॉरेस्टर्स क्रिएटिविटी

वन विभाग के छिंदवाड़ा वन मंडल में पदस्थ वनरक्षक श्री रोहित कुमार शुक्ला ने जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से एक अनोखा कार्य आरम्भ किया है। वह स्वयं के बनाये कार्टून के माध्यम से वन्यप्राणियों एवं वनों के प्रति जागरूकता फैला रहे हैं। अपनी कला का सही तरह से उपयोग कर उन्होंने कई महत्वपूर्ण विषयों को आम जनता के नजरों के सामने लाने का प्रयास किया है। उनका यह प्रयास उन्हें प्रशंसा का पात्र बनाता है। उनकी कला को आम लोगों तक पहुंचाने में मध्यप्रदेश टाइगर फाउंडेशन सोसाइटी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। MPTFS सोशल मीडिया के माध्यम से श्री रोहित की कला को आम जनता तक पहुंचाने का काम कर रहा है।

ये सिर्फ "हमारी" दुनिया नहीं है.

मारिओ स्टिंगर

अरे! सुखी क्यों भागती हो मैं तो आपका मित्र हूं चूहे पकड़ता हूं!

पिताजी! मौत की लाइन तो ऊपर है, उससे क्या डरना...!

पूजा कर खाना खिलाया और गाड़ी बढ़ाकर निकल गए...!

अब समझे...! शेर की खाल के नोट तो नहीं... लेकिन हड्डे जरूर बरामद हैं...!
आउच

क्या... वाकई ये दवा आपकी सेहत सुधार सकती है... वाकई में...?

अखबारों के आइने में

कान्हा के बाघ अब दहाड़ेंगे नौरादेही सेंचुरी में

वन विहार में पहली बार दिखी जंगली बिल्ली

04 MAR 2018

वन विहार में बाघों को बचाने के लिए पर्यटकों को किया जागरूक

वन : बच्चों के साथ दुलार कर रही 'दुर्गा'

Chasing happiness, the environmental way

ईको टूरिज्म बोर्ड विकसित करेगा मप्र में 61 पर्यटन क्षेत्र

प्रदेश टुडे 10 MAR 2018

मोबाइल एप से बाघों की गणना

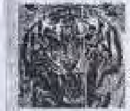

THE TIMES OF INDIA 21 MAR 2018

Van Vihar ready to beat the heat with water from wells

पत्रिका 02 MAR 2018

संयुक्त टास्क फोर्स का गठन...

वन विभाग के कर्मचारी करेंगे बिजली का मेंटेनेंस

शुभ संकेत है भारत के वन क्षेत्र में हो रहा इजाफा

Forest Deptt comes up with rehabilitation plan for black panther

प्रशंसा एवं पारितोषिक

26 जनवरी, 2018 (गणतंत्र दिवस) के अवसर पर वन तथा वन्यप्राणियों के संरक्षण और विकास में सराहनीय योगदान देने के लिए 38 वनकर्मियों को पुरस्कृत किया गया। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला ने भोपाल में गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर वन्यप्राणी अपराध अन्वेषण के क्षेत्र में आठ वनकर्मियों को सम्मानित किया गया। श्री अनिल यादव, वन रक्षक को प्रशस्ति पत्र तथा नगद पुरस्कार के रूप में 10 हजार रुपये प्रदान किये गये। इसी प्रकार वानिकी कार्यों में उत्कृष्ट योगदान के लिए 17 शासकीय सेवकों तथा वन विकास निगम के 13 वन कर्मियों को भी सम्मानित किया गया।

वन विकास निगम के सम्मानित अधिकारी एवं कर्मचारी

- श्री राजेश सोनी, वनपाल, खण्डवा, राजौर
- श्री प्रफुल्ल मेश्राम, स.प.क्षे, लामटा, कनकी
- श्री फिरोज खान, स.प.क्षे., रामपुर-भतौड़ी, सांपना
- श्री के.एल. परस्ते, स.प.क्षे., मोहगांव, कंचनगांव
- श्री प्रभाकर मर्सकाले, स.प.क्षे., लामटा , 1527
- श्री सोमनाथ शर्मा, वनपाल, कुण्डम, 153
- श्री एस.एल. नन्हेवार, स.प.क्षे., छिंदवाड़ा, 614
- श्री राजेश्वर प्रसाद मिश्रा, स.प.क्षे., उमरिया
- श्री राकेश कुमार मेश्राम, स.प.क्षे., लामटा, 1516
- श्री एच.एल. दाहिया, स.प.क्षे., बरघाट, 103
- श्री दिनेश रामटेके, स.प.क्षे., लामटा, 549
- श्री एस.के. उपाध्याय, स.प.क्षे., उमरिया, 689
- श्री दुर्गा प्रसाद सोलंकी, उपवन क्षेत्रपाल, खण्डवा, 02
- श्री मधुसूदन पंवार, स.प.क्षे., रामपुर-भतौड़ी, 1378
- श्री रवि मालवीय, वनपाल, छिन्दवाड़ा, 1783
- श्री शीतल सिंह कुशवाह, उपवन क्षेत्रपाल, खण्डवा
- पवन पांडे, प.क्षे., खण्डवा
- राजेन्द्र शर्मा, स.प.क्षे., रीवा-सीधी
- श्री मिथलेश मिश्रा, स.प.क्षे., उमरिया

वन्य प्राणी शाखा के सम्मानित अधिकारी एवं कर्मचारी

- सुश्री श्रद्धा पन्द्रे, विवेचना अधिकारी, सागर
- श्री विद्या भूषण सिंह, प्रभारी अधिकारी, सतना
- श्री अलप सींग सनोडिया, उपवन क्षेत्रपाल, सिवनी
- श्री अनिल यादव, वन रक्षक, भोपाल
- श्री राज किशोर प्रजापति, वन रक्षक, डॉग हैंडलर, सतना
- सुश्री मंजुला श्रीवास्तव, अधिवक्ता एवं मानसेवी, कटनी
- श्रीमती सुधा विजय सिंह, सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी, सागर
- श्री मनोज कुमार मिंज, सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी, नरसिंहगढ़

क्षेत्रीय वन मंडल के सम्मानित अधिकारी एवं कर्मचारी

- श्री अखिलेश अग्रवाल, उप वनमंडलाधिकारी सामान्य वनमंडल, रायसेन
- श्री नरेंद्र कुमार चौहान, वनक्षेत्रपाल परिक्षेत्र पूर्व रायसेन वनमंडल, रायसेन
- श्री दिलीप उपाध्याय, वन परिक्षेत्र अधिकारी ब्यावरा, वनमंडल, राजगढ़
- श्री अखिलेश अहिरवार, शीघ्रलेखक सामान्य वनमंडल, भोपाल
- श्री आर.ए. श्रीवास्तव, उप वनक्षेत्रपाल वनमंडल, सीहोर
- श्री चन्द्रमणि शुक्ला, वनपाल परिक्षेत्र बिनेका, वनमण्डल, औबेदुल्लागंज
- श्री संजय मौर्य, वनरक्षक परिसर रक्षक वनमंडल, रायसेन
- श्री चेतन आर्य, वनरक्षक बोरदीखुर्द सामान्य वनमंडल, सीहोर
- श्री रंजन मेढ़ा, वनरक्षक, सामान्य वनमंडल, विदिशा
- श्री कुलदीप श्रीवास्तव, वनरक्षक सामान्य वनमंडल, विदिशा
- श्री राजेंद्र वर्मा, स्थायीकर्मी, सामान्य वनमंडल, भोपाल
- श्री बाबूलाल तिवारी, स्थाईकर्मी वनमंडल, भोपाल

अनुसंधान एवं विस्तार विभाग के सम्मानित अधिकारी एवं कर्मचारी

- श्री रणछोर दास अग्निहोत्री, वनरक्षक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, भोपाल
- श्री सूर्यकांत गोस्वामी, वनरक्षक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, भोपाल
- श्रीमती गायत्री कश्यप, लेखापाल अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, भोपाल
- श्रीमती शकुन चौधरी, सहायक वर्ग-2 अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, भोपाल

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति (जनवरी-मार्च, 2018)

क्र.	अधिकारी का नाम	पदोन्नति उपरांत नवीन पदस्थिति
1.	श्री प्रशांत आत्माराम जाधव	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, प्रशासनिक अकादमी, भोपाल म.प्र
2.	श्री चरणजीत सिंह मान	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कैम्पा)
3.	श्री विभाष कुमार ठाकुर	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक आयुक्त रेशम संचनालय
4.	श्री एन. लुईखाम	वन संरक्षक, कार्य आयोजना, बैतूल
5.	श्री ए.के. बंसल	वन सरंक्षक, कार्य आयोजना, छतरपुर

भारतीय वन सेवा के अधिकारी जो सेवानिवृत्त हुए (जनवरी-मार्च, 2018)

1. श्री एच.ओ. संखवार, मुख्य वन संरक्षक (वन विकाश निगम, भोपाल)
2. श्री जी.पी. वर्मा, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, भोपाल
3. श्री डी.के. अग्रवाल, वन संरक्षक, शिवपुरी

हरित साहित्य

''नदी, घाटी अगर पर्वत''

(1) नदी, घाटी, अगर पर्वत घने जंगल नहीं होते।
हमारे आप के भी दिन कुशल मंगल नहीं होते।
(2) भरे दिखते जलाशय सब, बचा लेते अगर जंगल,
यहाँ दो चार मटकों के लिये दंगल नहीं होते।
(3) शकल में बीहड़ों की फिर, यहाँ पर मील मीलों तक,
तरफ चारों हमारे इस कदर चंबल नहीं होते।
(4) न होती जाम की हालत, धरा के फेफड़ों की जो,
हमारी जान पर खतरे यहाँ पल पल नहीं होते।
(5) पहुँच जाता अगर इंसां जो दुर्लभ घाटियों तक, तो,
बचे रमणीक कुछ थोड़े बहुत स्थल नहीं होते।
(6) मवरूण जीफ मिल गये होते हमें दस पाँच गज नीचे,
कई सौ गज यहाँ उतरे हुये 'भूजल' नहीं होते।
(7) किया होता अगर 'संचय' जरा 'विज्ञान' के ढंग से,
अतल गहराईयाँ होतीं महज दलदल नहीं होते।
(8) समझने को नहीं खाली बहुत से लोग सच्चाई,
वहाँ बारिश नहीं होती जहाँ बादल नहीं होते।
(9) 'विवेकी रंग' में रंगकर चलाते 'सोच' की कूँची,
प्रकृति के चित्र आँखों से हुये ओझल नहीं होते।
(10) असमतल घाटियों से भी गुजरना लाजमी होगा,
सफर में रास्ते सारे सदा समतल नहीं होते।
(11) हमें देते ही रहते हैं ये छाया, फूल, फल, लकड़ी,
उमर भर पेड़ जीवन में कभी बोझिल नहीं होते।
(12) हमारी खुशनसीबी है, कि हम जंगल में रहते हैं,
कि बहुतों को खजाने ये कभी हासिल नहीं होते।

रत्न दीप खरे
वनविस्तार अधिकारी,
झाबुआ (म.प्र.)

भूरसिंह का गांव

जिन्दगी के फलसफे में एक और किरदार जुड़ गया
भूरसिंह तुझसे मेरा भी तार जुड़ गया।
सोचा न था कि मिल सकूंगा इतने पक्षी मित्रों से
मैं तो ये मान चला था कि वो आएंगे बंद काँच की डिब्बियों में
लेकिन सुनकर उनकी चहचहाट दिल मेरा भी उड़ चला
कहता यूँ मुझसे कि ला तुझे भी दूँ फिरा।
बाँस के जंगलों को साल के दरख्तों को
छानते तुम ढूंढ़ते उन उड़ते परों को
पत्तियों की छाँव में, घास के झुरमुट में
कभी शाख, कभी मृदा पर,
कभी पत्थर तो आसमां पर,
इधर उड़ते, उधर रुकते, सतरंगी रंग बिखेरते
इन परों को ढूंढ़ते, चहूँ ओर हम घूमते।
इन पंछियों के नाम सुंदर, इनसे है हर वन सुंदर
काश कि होते पर मेरे भी, तो जा बैठता इन पंछियों में,
सीख लेता इनके गुर कि,
जीवन के हर इक मोड़ पर कैसे दें चहचहाते सुर।

अब लौट चला हूँ वापस फिर इन पत्थर के जंगलों में,
बरबस ही चली आई फेन की हवा पीछा करती
करवाने मुझसे यह वायदा कि, लौटकर आना होगा,
फिर इस दिल को बहलाना होगा, करो मुझसे यह वायदा।
ये मन कि मृगतृष्णा ही सही,
मुझे इसे बस दिल में ही बसाना होगा।

लौट रहा हूँ कर ये वायदा मिलूंगा तुझसे
इक बार भूरसिंग, बैठ करेंगे फिर मिलान
उन परों की फैहरिस्त का,
जिसमें कुछ नाम होंगे, जिनके कुछ काम होंगे, कुछ के गुणगान होंगे,
फिर मिलेंगे पक्षी मित्रों भूरसिंग के गाँव में,
लड़खड़ाते, मुस्कुराते, बढ़ चलेंगे चहचहाते,
दरख्तों के कदमों में, पहाड़ों के मस्तक में, मैदानों की गोद में
भूरसिंग के गाँव में, भूरसिंग के गाँव में।

जिंदगी के फलसफे में एक और तार जुड़ गया,
भूरसिंग तुझसे मेरा भी तार जुड़ गया।

प्रयुत मंडल,
परियोजना सहायक,
जैव विविधता शाखा,
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

THE FORSYTH TRAIL - A Unique 3 Day Trek in the Satpura Forest

More than a hundred years ago, British explorer Captain James Forsyth set off on the same trail in his earliest explorations of Central India, A walk through this trail will leave one in awe of his intrepid discoveries that continue to draw the world to the heart of India, to trace his footsteps on a path fittingly named after him. It is a unique Trekking & Camping experience in the heart of Central highlands that will satiate one's craving for spending quality time amidst nature. The trail includes a visit to the magnificent Satpura Tiger Reserve and a rare opportunity to trek the famous Forsyth Trail that passes through the pristine forest.

The trek organised by Madhya Pradesh Ecotourism Board is a memorable event which was very successful. People gathered up from all over the country to participate in the trek. During the trek, delicious food was served amidst the woods. The comfortable tents and camp fire enriched the experience of staying in night in the jungle of Satpura.

Celebrating 50 Years of Bandhavgarh National Park

Bandhavgarh National Park is widely acclaimed national park of India located in the Umaria district of Madhya Pradesh. Bandhavgarh was declared as national park on 23rd March 1968, with an area of 105 km^2. The buffer is spread over the forest divisions of Umaria and Katni and totals 820 km^2.

Bandhavgarh National Park has a rich historical past. Prior to becoming a national park, the forest here had long been maintained as a Shikargah or game preserve of the Maharajas and their guests.

Bandhavgarh came under the regulations of government in 1947. The Maharaja of Rewa had retained the hunting rights and no special conservation measures were taken until the area was constituted as a national park. Since then, numerous steps have been taken to retain Bandhavgarh National Park as an unspoilted natural habitat.

This park is very rich in biodiversity. The density of the tiger population in Bandhavgarh is one of the highest in India. The park has a large breeding population of leopards and various species of deer.

This year Bandhavgarh National Park celebrated its 50th anniversary on the 23rd of March.

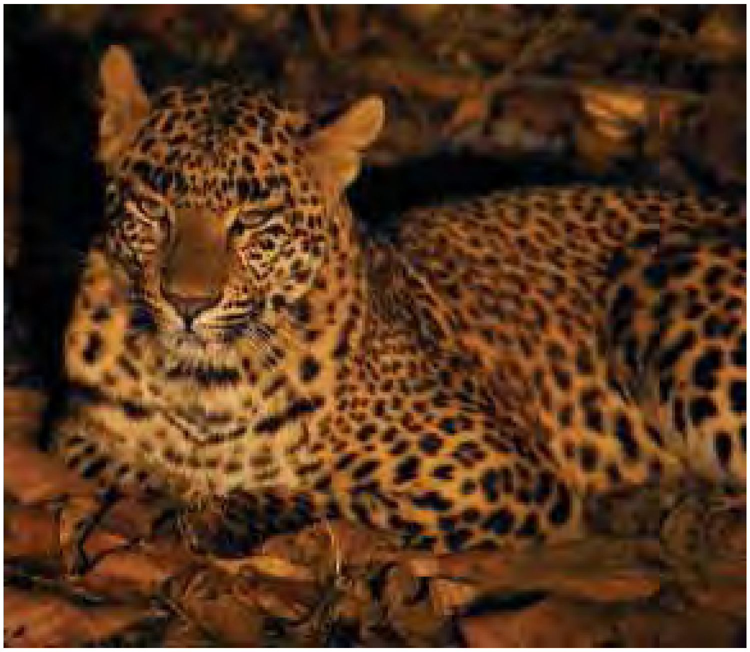

Bandhavgarh Wildlife

गोरैया दिवस 20 मार्च

वन विभाग के छिंदवाड़ा वन मंडल के वनरक्षक श्री रोहित कुमार शुक्ला ने गोरैय्या दिवस के अवसर पर स्वयं बनाये कार्टून के माध्यम से गोरैया के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया।

International Day of Forests
21st March

Source : Madhya Pradesh Tiger Foundation Society